साधनों का सदुपयोग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन में साधनों का बहुत बड़ा महत्त्व है। साधनों के बिना जीवन चल नहीं सकता। उपादान और निमित्त दो हैं। उपादान सामग्री है और निमित्त साधना है। विद्यार्थी को पढ़ने के लिए पुस्तकों की आवश्यकता होती है। पुस्तकें साधन हैं। व्यवस्था या साध्य निमित्त है। अच्छे अध्यापक का मिलना, पुस्तकों की व्यवस्था तथा अन्य सहकारी कारणों का मिलना निमित्त है। साधनों के बिना कोई कार्य पूर्ण नहीं होता। घड़ा बनाने के लिए मिट्टी, चाक, कुम्हार और अन्य कारणों की आवश्यकता होती है। किसी एक वस्तु के अभाव में कार्य पूरा नहीं हो सकता। इसलिए उपादान और निमित्त दोनों आवश्यक है। साधन और साध्य दोनों के बिना पूर्णता नहीं मिल सकती। साध्य की शुद्धि के लिए साधन की शुद्धि भी आवश्यक है। यदि हमारा साध्य कितना भी पवित्र रहे किन्तु साधन ना रहे तो साध्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती। साधन और साध्य की पवित्रता पर महात्मा गांधी ने बहुत अधिक जोर दिया था। उन्होंने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए अहिंसा का मार्ग चुना। उनका मानना था कि शुद्ध साधन से ही शुद्ध साध्य की प्राप्ति की जा सकती है। साधनों का सदुपयोग सावधानी से करना चाहिए। गाड़ी को चलाने वाला चालक यदि असावधान हो जाए तो गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो जायेगी और बैठे हुए यात्रियों की जान भी जा सकती है। इसलिए साधन और साध्य दोनों सम्यक होने चाहिए।

सन्मार्ग का अर्थ है जीवन जीने के लिए अच्छे मार्ग का चयन करना। अच्छाई और बुराई दोनों समाज में रहती हैं। जब बुराई पर अच्छाई की विजय होती हैं तो समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। महाभारत के युद्ध में कौरव और पाण्डव दो विचारधारा वाले थे। पाण्डव धर्म के द्वारा विजय प्राप्त करना चाहते थे और कौरव येनकेन प्रकारेण युद्ध जीतना चाहते थे। कौरव बुराई के मार्ग पर चल रहे थे। इसीका परिणाम था कि वे युद्ध में पराजित हुए। जो बुरे मार्ग पर चलता है उसक जीवन दुःखी होता है और जो अच्छे मार्ग पर चलता है उसका जीवन सुखी होता है। इस संसार में सभी मानव सुख चाहते हैं दुःख कोई नहीं चाहता। सुख और दुःख मानव को प्रारब्ध के अनुसार प्राप्त होते हैं। मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे वैसा फल प्राप्त

होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है तो उसे सुख की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कर्म करता है तो उसे दुःख की प्राप्ति होती है। कर्म अपना फल अवश्य देते हैं। बिना भोगे कर्म का फल नष्ट नहीं होता। अतः मनुष्य को सदैव अच्छा कर्म ही करना चाहिए। जिससे उसका लोक और परलोक सुधरे और सुख की प्राप्ति हो। धर्म क्रिया जैसे सामायिक, संवर, दया व्रत, उपवास, पौषध, त्याग–प्रत्याख्यान आदि का जैन धर्म आराधना में प्रमुख साधना मार्ग हैं। भगवान वीतराग देव ने इन क्रियाओं की प्ररूपणा आत्म कल्याण के हेतु प्ररूपित की। जीवन को निर्विकार दशा में लाने को तथा अनन्त कालिक कुकर्मो का निवारण करने में ये क्रियायें जीवन पुरुषार्थ को सार्थक बना देती हैं। मैले कपड़े को साफ करने के लिए कुछ तो करना ही होगा। केवल यह विचार लेकर बैठ जाएं कि कपड़ा साफ हो जाए तो इतने मात्र से कपड़ा साफ नहीं होगा। तप मानव के आन्तरिक और बाहरी शुद्धता का साधन है। इसलिए तप का मानव जीवन में बहुत महत्व है। तप से सुख और शांति मिलती है।

जिस वस्तु से हम परिचित नहीं होते उसके प्रति हमारा अनुराग नहीं होता है। अनुराग परिचित होने के बाद होता है। तप के प्रति हमारा अनुराग तभी बढेगा जब हम उससे परिचित होंगे। तप एक छोटासा शब्द है। दो अक्षरों का, वह भी लघु अक्षरों का। इसकी शब्द रचना जितनी लघु है इसका कार्य उतना ही महान् है। अणु से कई गुना शक्ति इसमें है। इससे स्पष्ट है कि तप में अणु से भी कई गुना शक्ति है। तप अपने आप में शक्ति है। उसका दुरुपयोग करना शक्ति का दोष नहीं, व्यक्ति की उच्छृंखलता है। योगदर्शन में भी कर्म को क्रियारूप ही माना गया है। महर्षि पतंजलि ने प्राणियों द्वारा किये जाने वाले कर्मों की तीन श्रेणियां बतायी हैं– शुक्ल कर्म अर्थात् पुण्य कर्म, कृष्ण कर्म अर्थात् पाप कर्म, शुक्ल कृष्ण कर्म अर्थात् पाप पुण्य कर्म का मिश्रित रूप। शुक्लकर्म उसको कहते हैं जिनका फल सुख भोग होता है। कृष्णकर्म उसको कहते हैं जो नरक आदि दुःखों के कारण हैं। सिद्ध योगी के कर्म किसी भी प्रकार का भोग देने वाले नहीं होते क्योंकि उनका चित्त कर्म संस्कारों से शून्य होता है। इसलिए उनके कर्मों को अशुक्ल और अकृष्ण कहा जाता है। उपनिषदों के अनुसार जन्म का साक्षात् सम्बन्ध कर्म से है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं बल्कि जन्म और कर्म का अविनाभावी सम्बन्ध है। प्राणियों में विद्यमान सुख–दुःख का सम्बन्ध उनके द्वारा किये गये

शुभाशुभ कर्म हैं। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि जो व्यक्ति शुभ कर्म करता है वह अच्छी योनि में जन्म पाता है और जो व्यक्ति कुत्सित कर्म करता है वह खराब योनि में जन्म लेता है। जो साधु कार्म करता है, वह साधु होता है और जो पापकर्म करता है वह पापी होता है। पुण्य कर्म से पुण्य तथा पापकर्म से पाप होता है। इस प्रकार मनुष्य के उत्थान– पतन, सुख–दुःख तथा ऐश्वर्य अनैश्वर्य का हेतु कर्म को बताया गया है। कर्म साधन है। इस साधन के द्वारा आत्मशुद्धि का प्रयास करना चाहिए। यदि कर्म अच्छा रहता है तो जीवन में सुख का अनुभव होता है।